नबियों के क़िस्से

भाग १

हज़रत इब्राहीम अ०
हज़रत यूसुफ़ अ०

लेखक

मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी

अनुवादक

सैयद अहमद अली नदवी

प्रकाशक

दारे अरफ़ात रायबरेली

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशक
दारे अरफ़ात रायबरेली

प्रथम संस्करण
जनवरी 1998

मूल्य रूपये

मुद्रक :
काकोरी आफसेट प्रेस
बी० एन० वर्मा रोड, लखनऊ – 18
फोन : 229616

www.abulhasanalinadwi.org

प्राक्कथन

मौलाना सय्यद अबुल हसनी अली नदवी ने ज़बान की तालीम के सिलसिले में इस हक़ीकत को मद्देनज़र रखते हुए कि ज़बान की तालीम के साथ–साथ ज़रूरी मालूमात और किरदार व अख़्लाक़ की तलक़ीन भी की जा सकती है और नई नस्ल के लोगों को बा सलाहियत और किरदार का इन्सान बनाने के लिए पहला ज़रिया ज़बान की तालीम को भी बनाया जा सकता है । अरबी ज़बान की तालीम के सिलसिले में इस नुक़्त–ए–नज़र को ख़ास तौर से इख़्तियार किया और भारत के अरबी की तालीम के मदरसों में मिस्र (Egypt.), शाम(Syria) की लिखी हुई उन Reader Books के बजाय जो यूरोप के माद्दियत परस्तों और मुलहिद ज़हन की तरजुमानी करती थी उनके बजाय ऐसी Reader Books लिखने का सिलसिला शुरू फ़रमाया जिससे सिर्फ अरबी ज़बान की ही तालीम न होती हो बल्कि इस्लामी अख़्लाक़ व किरदार की तरजुमानी होती हो, चुनांचे "क़ससुन नबीय्यीन" और "अल क़िरअतुर राशिदा" के हिस्से लिखे जिससे एक तरफ़ प्राइमरी के Students की ज़बान को ज़हन की आहिस्ता–आहिस्ता तरक्क़ी और उनके Stages का ख़याल रखा और दूसरी तरफ़ ऐसे वाक़िआत और बातों से इसको जोड़ा कि जो बच्चों की दिलचस्पी और उनकी अख़लाक़ी व सक़ाफ़ती (Morel & Cultural) हालत को भी पूरा करती है । "क़ससुन नबीय्यीन" नबियों के हालात पर मुश्तमिल एक किताब है । और नबियों के हालात को इस तरह पेश किया कि इनमें इन्सानी व बशरी कैफ़ियतों का लिहाज़ रखा और इनके बुलन्द किरदार व अख़्लाक़ की झलकियां भी शामिल रखीं और इसको खूबसूरती के साथ किया कि ज़बान सिखाने का जो Classical System है वह पूरी तरह महफ़ूज़ रहा ।

अब चूंकि नबियों के अख़्लाक़ व किरदार और उनके बशरी हालात, बुलन्द इन्सानी ख़ुसूसियात पैदा करने के लिए बेहतरीन ज़रिया है ! इसलिये "कससुन नबीय्यीन" की यह Reader Book एक वक़्त में दोनो मक़सद पूरा करती हैं ।

www.abulhasanalinadwi.org